मधुबन ओम् शान्ति अंक 263 जून 2014

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र

(09-05-14)

प्राणप्यारे अव्यक्त मूर्त मात-पिता बापदादा के अति लाडले, सदा अपनी शुभ भावनाओं से शक्तिशाली सकाश देने की सेवा पर तत्पर, हर दृश्य में कल्याण की अनुभूति करने कराने वाली निमित्त टीचर्स बहनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आज मुम्बई विलेपार्ले सेवाकेन्द्र से मिल रही हूँ। कोई प्रश्न पूछता है तो मैं एक मिनट साइलेन्स में चली जाती हूँ, कोई समाचार सुनाता है तो सुनकर मर्ज कर लेती हूँ। समय ऐसा है आवाज में आना, सुनना सुनाना उसके तो कई बड़े अनुभवी हैं, परन्तु हमारा जब भी मिलन हो तो साइलेन्स द्वारा ऐसी ईश्वरीय आकर्षण हो जो हर एक को ऐसा वन्डरफुल अनुभव हो जाए जो कभी भूले नहीं। इस बार तीन सप्ताह से बाम्बे में हूँ, यह भी ड्रामा में नूंधा हुआ था। मैं देख रही हूँ कि इस तीन सप्ताह का एक एक दिन कितने कल्याण का है। एक सप्ताह हॉस्पिटल में रही, वहाँ भी कितनी आत्माओं से मिलना हुआ। बाबा ने बहुत अच्छी सेवायें कराई। बाम्बे में पहले-पहले बाबा आया था उस समय बाबा के संग रही थी, तब भी अनेक प्रकार की सेवायें हुई थी। अभी फिर इतने सालों के बाद निमित्त शरीर के कारण आना हुआ। निमित्त शरीर से बाबा जो भी सेवा लेता आ रहा है उसमें कल्याण समाया हुआ है। मैं कहूं कि फुलस्टाप दो, यह भी बचपना लगता है, यह भी शोभता नहीं है क्योंकि इस कल्याणकारी ड्रामा में सब बातों में कल्याण है। यहाँ जो भी रहते हैं, या मिलने आते हैं हर एक अनुभव करते हैं कि यहाँ का वायुमण्डल बहुत पावरफुल बन गया है। वायुमण्डल को पावरफुल बनाने के लिए अन्दर में किसी भी आत्मा के प्रति द्वेष भाव न हो। सब आत्मायें अच्छी हैं, सबके प्रति अच्छी भावनायें रखना यह हमारी शान है। शान अर्थात् ऑनर रहे क्योंकि पास विद ऑनर में आना है। तो हमारी हर बात न्यारी और निराली हो, शान माना व्यर्थ तो छोड़ा लेकिन साधारण संकल्प भी न हो। हमारे संकल्पों की क्वालिटी बहुत ऊंची हो।

कहा जाता है मनोवृत्ति। दिल में कोई भी प्रकार की अच्छी या न अच्छी फीलिंग आई तो वृत्ति के साथ दृष्टि भी ऐसी हो जाती है। तो हमारे अन्दर फीलिंग बहुत अच्छी हो, सब बाबा के प्यारे हैं, संगमयुग है, समय थोड़ा है, घर जाना है, यह स्मृति है तो वृत्ति में और कोई बात नहीं है। तो दुनिया की सब बातों को छोड़ बाबा का सन्देश देना है, हम सब ऐसे साक्षात्कार मूर्त बन जाएं जो हर आत्मा का भटकना छूटे, फीलिंग आये कि ईश्वरीय मिलन की यही घड़ी है।

बाकी तो अब जल्दी ही अपने प्यारे मधुबन घर में पहुंच जाऊंगी। तबियत अच्छी होती जा रही है। मीठी दादी गुल्जार भी हमारे साथ यहाँ ही हैं। हम दोनों का आपस में जो सखी स्नेह है, वह भी बहुत अच्छी अनुभूतियां कराता है। बीच-बीच में गहरी रूहरिहान भी होती है। गुल्जार दादी तो बहुत न्यारी प्यारी है। बहुत कम शब्दों में जवाब देती हैं। दादी कह रही है अभी तक ब्राह्मण परिवार में जो थोड़ी अलबेलेपन की लहर है, इसे अब समाप्त करो। तीव्र पुरुषार्थी बन सम्पन्नता और सम्पूर्णता की घड़ियों को समीप लाओ। अभी हर ब्राह्मण बच्चे के चलन और चेहरे द्वारा हर एक को बाबा दिखाई दे। अब तक वाणी की सेवायें हुई, अब दृष्टि द्वारा और साक्षात्कार स्वरूप द्वारा सेवा करने का समय है।

अच्छा - हम दोनों दादियों के साथ सर्व पारला निवासी भाई बहिनों की पूरे ब्राह्मण परिवार को विशेष यादप्यार स्वीकार हो। अच्छा सर्व को याद.....

ईश्वरीय सेवा में,

बी.के.जानकी

ये अव्यक्त इशारे

स्व-उपकारी के साथ पर-उपकारी बनो

1) जैसे स्वयं की उन्नति का सदा ध्यान रहता है ऐसे अपने समय को, सुखों को, प्राप्ति की इच्छा को महादानी बन सर्व के प्रति कार्य में लगाओ। स्वयं के नाम, शान, मान सर्व प्राप्ति की इच्छा को कुर्बान कर पर-उपकारी बनो। बाप समान हर समय हर आत्मा के गुणमूर्त को देखो।

2) किसी की भी कमजोरी वा अवगुण को देखते अपनी शुभ भावना से, सहयोग की कामना से अवगुण को देखते हुए उस आत्मा को भी गुणवान बनाने की शक्ति का दान दो। बाप समान स्वयं के खज़ानों को सर्व आत्माओं के प्रति देने वाले दाता रूप बनो।

3) विशेष रूप से अपनी मन्सा शक्ति द्वारा, वाणी की शक्ति द्वारा, अपने संग के रंग द्वारा, सम्बन्ध के स्नेह द्वारा, खुशी के अखुट खज़ाने द्वारा अखण्ड दान करते रहो। कोई भी आत्मा सम्पर्क में आये तो खुशी के खज़ाने से सम्पन्न हो करके जाये। ऐसे अखण्ड महादानी बनो तब कहेंगे परोपकारी।

4) किसी भी आत्मा से कुछ लेकरके देने के इच्छुक नहीं। संकल्प में भी यह न आये कि यह करे तो मैं करुँ, यह बदले तो मैं बदलूँ, कुछ वह बदले कुछ मैं बदलूँ। यह बदले वा यह करे वा यह कुछ सहयोग दे, कदम आगे बढ़ावे, ऐसे संकल्प वा ऐसे सहयोग की भावना परवश, शक्तिहीन, भिखारी आत्मा से परोपकारी आत्मा नहीं रख सकती।

5) परोपकारी अर्थात् भिखारी को भी मालामाल बनाने वाले, अपकारी के ऊपर उपकार करने वाले, गाली देने वाले को गले लगाने वाले, अपने पर-उपकार की शुभ भावना से, स्नेह से, शक्ति से, मीठे बोल से, उत्साह उमंग के सहयोग से दिलशिकस्त को शक्तिवान, भिखारी को बादशाह बना देना यही है परोपकार करना।

6) सदा सन्तुष्टमणी के समान स्वयं भी सन्तुष्ट रह सर्व को सन्तुष्ट करो। होपलेस में होप पैदा कर दो, जिसके प्रति सब निराशा दिखायें, ऐसे व्यक्ति वा ऐसी स्थिति में सदा के लिए उनकी आशा के दीपक जगा दो तब कहेंगे परोपकारी।

7) जैसे आपके जड़ चित्र अभी तक अनेक आत्माओं की अल्पकाल की मनोकामनायें पूर्ण कर रहे हैं, ऐसे चैतन्य रूप में जो आपके सहयोगी भाई वा बहन परिवार की आत्मायें, बेसमझी वा बालहठ से अल्पकाल की वस्तु को सदाकाल की प्राप्ति समझ, अल्पकाल का मान-शान-नाम वा अल्पकाल के प्राप्ति की इच्छा रखती हैं तो दूसरे को मान देकर स्वयं निर्माण बन जाना, यही है परोपकार। यह देना ही सदा के लिए लेना है।

8) परोपकारी स्वत: ही स्व उपकारी हो जाते हैं। देना ही स्वयं प्रति मिलना हो जाता है। महादानी सर्व अधिकारी स्वत: हो जाते हैं। जैसे राजा दाता होता है, सम्पन्न राजायें सदा प्रजा को देने वाले होते हैं, ऐसे परोपकारी बच्चे स्वयं के प्रति इच्छा मात्रम् अविद्या बन अखण्ड दानी होंगे।

9) जैसे ब्रह्मा बाप ने स्वयं का समय भी सेवा में दिया। स्वयं निर्मान बन बच्चों को मान दिया। पहले बच्चे, नाम बच्चे का काम अपना। काम के नाम की प्राप्ति का भी त्याग, नाम में भी परोकारी बने। अपना त्याग कर दूसरे का नाम किया। स्वयं को सदा सेवाधारी रखा, यह है परोपकार।

10) जैसे बाप ने नाम, मान, शान सबका त्याग किया, स्वयं का सुख बच्चों के सुख में समझा, बच्चों की विस्मृति कारण दु:ख का अनुभव सो अपना दु:ख समझा, बच्चों की गलती भी अपनी गलती समझ बच्चों को सदा राइटियस बनाया, इसे ही कहते हैं परोपकार। तो ऐसे फालो फादर करो।

11) जैसे संस्कारों की समानता वाले आपस में दोस्त बन जाते हैं, ऐसे ग्लानि करने वालों प्रति भी अन्दर स्नेह और सहयोग की भावना हो, दोनों में अन्तर न हो। इसको कहा जाता है – अपकारी पर उपकार की दृष्टि अथवा विश्व कल्याणकारी भावना। जब ऐसी स्थिति बनेगी तब सम्पूर्णता के समीप पहुँचेंगे।

12) भले कोई कड़े संस्कार वाले हों, उनको भी अपनी शुभचिन्तक स्थिति के आधार से ट्रॉन्सफर कर समीप लाओ। दूसरे की गलती सो अपनी गलती समझो, इससे ही संगठन मजबूत होगा लेकिन यह तब होगा जब एक-दूसरे में फेथ होगा। परिवर्तन करने का फेथ या कल्याण करने का फेथ चाहिए।

13) कोई भी बात देखते सुनते उसको बिल्कुल समा लो। हर आत्मा के प्रति आत्मिक दृष्टि और कल्याण की भावना रहे। जब अज्ञानियों के लिए कहते हो अपकारियों पर उपकार करना है तो संगठन में भी एक दूसरे के प्रति रहम की भावना रहे।

14) जैसे बाप अपकारियों पर उपकारी है ऐसे ही आपके सामने कैसी भी आत्मा हो लेकिन अपने रहम की वृत्ति से, शुभ भावना से उसे परिवर्तन कर दो। जब साइन्स वाले रेत में खेती पैदा कर सकते हैं तो क्या साइलेन्स वाले धरती का परिवर्तन नहीं कर सकते! संकल्प भी सृष्टि बना देते हैं। तो सदा धरती को परिवर्तन

करने की शुभ भावना हो। अपनी चढ़ती कला के वायब्रेशन द्वारा धरती का परिवर्तन करते चलो।

15) कोई रोज़ आपकी ग्लानि करे, एक साल तक करे। एक साल तक भी नहीं बदले तो क्या आप कल्याण करेंगे? वो अकल्याण करे, आप कल्याण करेंगे? या थोड़ा-सा मुंह ऐसे कर लेंगे। चलो, घृणा भाव नहीं हो लेकिन मन से किनारा करेंगे कि यह ठीक नहीं है या उसको ठीक करेंगे? अपकारी पर भी उपकार करना, यही आप ज्ञानी तू आत्मा का कर्तव्य है।

16) ब्राह्मण परिवार में आप एक एक का फर्ज है - शुभ भावना, शुभ कामना देना और शुभ भावना, शुभ कामना लेना। उसी संस्कार से देखो और चलो। परदर्शन, परचिंतन और परमत के तरफ कभी भी आकर्षित नहीं होना। इन तीन पर को काटकर एक पर याद रखो वह पर है पर उपकार। ब्राह्मणों का स्वभाव है पर उपकार। सदा यही याद रखो कि मुझ ब्राह्मण आत्मा का स्वमान है- ''पर उपकारी''।

शिवबाबा याद है ? 11-2-13 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''बाबा के काम का बनना है तो अपने अन्दर ऐसी सफाई करो जो स्पष्ट पता चले कि मैं किसकी हूँ''

(दादी जानकी)

हमारी स्टूडेन्ट लाइफ होने के कारण स्टडी से प्यार है तो संगठन में बैठ करके जो बाबा सिखा रहा है वो रिवाइज करते हैं। सच्चे पुरुषार्थी को रिवाइज के बाद रियलाइजेशन अच्छी होती है। तो हमारे बाबा ने अपना बनाके मुस्कराने की ट्रेनिंग दी है इसलिए मन्दिरों में देवताओं का दर्शन करने से ही खुश हो जाते हैं। अभी हम इस स्टडी से दर्शनीय मूर्त बन रहे हैं। कुम्भ के मेले में तो साधू सन्यासियों के दर्शन के लिए भीड़ लगती है। अभी हम देवता बनने वाली आत्मायें ऐसा दर्शनीय मूर्त बनें। जब भी याद में बैठते हैं तो हरेक अपने आपको देखे या बाबा को देखे.. वन्डर है। मैं कौन हूँ, मेरा कौन हैं वो दिखाई पड़ता है। जो अन्दर भावना है वो स्वरूप में दिखाई पड़ती है, अनुभव होता है।

बाबा को किसका नाम बिल्कुल याद नहीं आता था इसलिए बच्चा बच्ची कहता था, इत्तफाक से कोई एक दो को नाम से बुलाता था। तो मेरा भी यह हाल हो गया है, नाम भूल जाता है इसलिए यह बाबा का बच्चा है। जब बाबा का बच्चा हूँ तो खुशी होती है फिर स्टूडेन्ट लाइफ है। जब मैं ज्ञान मार्ग में आयी तो किसी ने पूछा कब तक यह पढ़ाई पढ़ेंगी? मैंने जवाब दिया जब तक जियेंगी तब तक पढ़ेंगी। तब इतना थोड़ेही पता था कि इतना समय जीना है, इस पढ़ाई के लिए जीना है। जहाँ तक जीना है वहाँ तक पढ़ना है इससे फरिश्ता रूप बनेंगे। फरिश्ते ऊपर रहते हैं।

जब पहले छोटे हैं तो त्याग वृत्ति है, फिर कारोबार में हैं तो अनासक्त वृत्ति है, अब उपराम वृत्ति है। वाह! कुछ मेरा नहीं है। त्याग तो हो गया और छोड़ा तो छूट गये। कोई बात न पकड़ी है, न पकड़ सकते हैं। आज बाबा ने कहा मायाजीत तो बन गये हो, प्रकृतिजीत भी बन जाओ। धरती, पानी सब नाटक दिखायेंगे, नीचे ऊपर होंगे परन्तु समय अनुसार प्रकृति को भी सतोप्रधान बनना है ना। तो अभी तक तमोप्रधानता छोड़ती नहीं है, पर हम तो प्रकृति के मालिक हैं।

परमात्मा है बाप, प्रकृति है माँ। अगर यह धरती माँ न होती तो पार्ट कहाँ बजाते? आसमान न होता तो कैसा होता? प्रकृति के पाँच तत्वों की इस दुनिया में शरीर भी पाँच तत्वों का है। बाप कौन है, बाप का घर कौन-सा है, यह पता नहीं था। ऐसे प्रकृति में माया प्रवेश हो गयी। आगे समझते नहीं थे, माया क्या है? प्रकृति अलग है, शरीर अलग है इसमें माया प्रवेश हो गयी है। माया के पाँच विकार हैं, प्रकृति के पाँच तत्व है। यह नॉलेज इतनी अच्छी है जितना गहराई में जाओ, तो प्रकृति को भी जान लिया, माया को भी जान लिया, बाप को भी जान लिया, खुद को भी जान लिया। तो इस ज्ञान को सारे दिन में अच्छी तरह से मनन-चिंतन करो फिर ऐसे नहीं लगेगा कि रूखी सूखी कोई काम की नहीं हूँ। अगर बाबा के काम का बनना है तो अपने अन्दर ऐसी सफाई करो जो मैं किसकी हूँ वो स्पष्ट पता पड़ने लगे। सफाई नहीं होती है तो यह परदर्शन, परचिंतन मैला बना देता है। कोई ऐसा अच्छा काम करो, जहाँ भी जाओ वहाँ की अच्छी बातों को ग्रहण करो तो वो अच्छा बन जाता है। नहीं तो कोई ऐसी वैसी बात अन्दर चली जाती है और वो जैसे ही इन्टर करती है तो फियर होना शुरू हो जाती है। जहाँ फियर (डर) होगा वहाँ चिंता होती है, तो कभी खुशी नहीं हो सकती है। जिसे चिंता और कोई बात का डर है तो

उसे कभी खुशी नहीं होगी। तो भगवान ने जो खुशी दी है वो खुशी बाँटों।

शुरू से ले करके बाबा ने जो जो समझाया है वो करने के लिए प्रेर रहा है। कह रहा है चल उठ... ऐसी स्थिति बनाने के लिए प्रयास करने वालों को प्रेरणा मिलेगी। बाकी ऐसे ही साधारण पुरुषार्थी को बाबा से कोई प्रेरणा नहीं मिलेगी। भले कितना भी कुछ करे, उसमें खुश होवे पर उनसे कोई को वैसा बनने की प्रेरणा नहीं मिलेगी, ऐसी लाइफ कोई काम की नहीं है। जिसमें देह-अभिमान है वो इतनी सेवा नहीं कर सकता है। जो देह-अभिमान से मुक्त है उनसे ऑटोमेटिकली कई प्रकार की सेवायें होंगी। जो ऐसा कोई के लिए मिसाल अनुभवी बनें तो अन्य को भी प्रेरणा मिलती है। ओम् शान्ति।

दूसरा क्लास (डबल विदेशियों के साथ)

"धर्मराज की सजाओं से बचना है तो ऐसा कोई कर्म नहीं करना जो विकर्म के खाते में जाये"

(दादी जानकी)

जो मुख से कहते हो कि नो प्रॉबलम तो वो करना भी पड़ेगा। जो बाबा कहता है वो हमको करना ही है। शिवबाबा जो कहता है वो करते हैं तो वह जिम्मेवार है। ब्रह्माबाबा भी जो कहता है तो जिम्मेवार ब्रह्माबाबा है। परन्तु तुम सिर्फ सत्य रहो, सच्चे रहेंगे तो आधी भूल माफ कर देगा। भूल छिपायेंगे तो डबल ट्रिबल सजा मिलेगी।

मैंने एक बारी बाबा को कहा था बाबा मुझे धर्मराज की आँख नहीं दिखाना, बाबा मेरा ख्याल रखना। तो बाबा ने कहा ऐसा कोई कर्म नहीं करना जो विकर्म के खाते में चला जाये। तो इस एक जन्म में अपने आपको बहुत सम्भालना है यानि इतना सम्भालना है जो मेरा हर कर्म अकर्म के खाते में जाये। अकर्म के खाते में तब जायेगा जब श्रेष्ठ खाते में जमा होता रहेगा। एक भी भूल से व्यर्थ संकल्प चला तो वो छोड़ेगा नहीं, फिर फिर बार बार आयेगा। इतनी गहरी फिलोसॉफी को आप लोगों ने समझा है इसलिए मैं आपको पदमापदम भाग्यशाली समझती हूँ।

बाबा के इस ज्ञान को कूट-कूट करके सुनाने के लिए निमित्त बने हैं, तो वह बहुत ही सौभाग्यशाली हैं और आप लोगों ने स्वीकार किया है, अभी आप सबको बाबा का प्यार बहुत मिला है। कोई अव्यक्त मुरली ऐसी नहीं होगी जिसमें बाबा ने फॉरेनर्स को याद न किया हो, उनके लिये कुछ न बोला हो। फॉरेन की सेवा से बाबा के विराट रूप का साक्षात् शुरू हुआ है। आप लोगों को भी यह टच हुआ कि हम बाबा के थे, अभी हैं। यह टचिंग करते ही बाबा ने खींच लिया। फिर कोई कहाँ भी रहता है, पर मैं बाबा का हूँ, बाबा के घर रहता हूँ। बाबा के साथ सर्व सम्बन्धों की शक्ति का अनुभव किया है? उसकी निशानी है, कभी कोई सम्बन्धी की याद नहीं आती है। अगर कोई भी सम्बन्धी की याद आई तो बाबा से सर्व सम्बन्ध की शक्ति नहीं मिलेगी, इसलिए बड़ा खबरदार, होशियार रहना है। बाबा की याद में बैठे कोई की याद आये तो यह भी भगवान को मंजूर नहीं है। बाबा के सिवाए किसी और की याद क्यों आती है, वो भी कभी बताऊंगी। यह सूक्ष्म कल्प पहले वाला कनेक्शन है, रिलेशन है वो स्मृति में रहे, स्मृति औरों को आवे। मैं अपने आपसे पूछती हूँ कि मेरे खुशी का आधार क्या है? मेरे जैसी खुशी सभी को हो जाये, यही मेरी भावना है। ऐसा रूहानी कनेक्शन हो, ऐसी याद हो तो इससे अनेकों को जो प्राप्ति है उनसे जो सेवा हुई है, वो याद आवे तो कोई हर्जा नहीं है। जी चाहता है, ऐसी याद हो जो उनको देख बाबा दिखाई पड़े। अपना नाम, रूप, देश, काल भूल जाये। यह जो न्यारा बनने की शक्ति है, सम्बन्ध में न्यारे रहने की शक्ति है, वह परमात्मा का प्यार एक्स्ट्रा लेने के लिए अधिकारी बना देती है। जब यहाँ साथ में रहने की आदती होंगी तो सूक्ष्मवतन में भी ऐसी क्वालिटी वाली अव्यक्त बनेंगी। इतना सूक्ष्म पुरुषार्थ कर रहे हो ना! मोटी बुद्धि वाला नहीं बनना। जहाँ मेरा बाबा वहाँ मैं, यह है सूक्ष्म, पर है प्रैक्टिकल।

जैसे बाबा एक ही टाइम सर्व आत्माओं को अपनी अंगुली पर चलाता है, ऐसा भान आता है! आपने कुछ पुरुषार्थ किया है या ऐसे ही चला आया है? तो पहले इस अंगुली से स्वदर्शन चक्र घुमाना है फिर बाबा हमको घुमायेगा। कैसी भी भाषा वाले हों, बाबा के सामने आयेंगे तो वो कितना खुश होते हैं। तो हमारे सामने भी कोई आवे या हम किसी के सामने हों - यह भूल से भी न निकले कि यह कैसा है, यह ऐसा है... यह बड़ी भूल है। आजकल यह सबसे बड़ी भूल है, ऐसी बातें जो न काम की है, यह ऐसा यह वैसा है, यह सुनना सुनाना बन्द। अब यह भूल भी न हो। इसके लिए सोचो हर एक अच्छा है, भावना हमारी अच्छी हो कि अच्छा हो जायेगा। न भी हुआ, कुछ भी हुआ पर मेरी भावना सदा ही अच्छी रहे, सभी खुश हो जाएं। ओ.के., ओम् शान्ति।

तीसरा क्लास

"दृष्टि सदा सुखकारी तब होगी जब बुद्धि की लाइन क्लीयर हो, मनोवृत्ति साफ हो"

(दादी जानकी)

इतना मीठा बाबा है, संगमयुग है, इतना बड़ा परिवार है, इतने बड़े परिवार को देख हमारे बचपन के दिन याद आ रहे हैं। पता नहीं था इतनी वृद्धि होगी, इतनी वृद्धि को देख प्रभु लीला को देख कैसे कहाँ कहाँ से चुन चुन करके माला बनाई है। दुनिया में करोड़ों हैं, उसमें लाखों निकल आये। मुरली बहुत अच्छा दर्पण है।

बाबा अपने बगीचे को देख, हर एक फूल के रूप, रंग, खुशबू को देखता है। उसमें भी गुलाब का फूल सबसे अच्छा लगता है। गुलाब के फूल का जैसा है सुन्दर रंग, ऐसी है खुशबू। गुलाब के फूलों में भी सब एक जैसे नहीं होते हैं, थोड़ा-थोड़ा फर्क होता है, पर है गुलाब का फूल। तो बाबा कांटों के जंगल को फूलों का बगीचा बना रहा है। दुनिया में जहाँ तहाँ कांटे ही लगते हैं। रूहानियत को देखो, खुशबू को देखो, रंग भी बहुत अच्छा है। रूहानियत में रह इस बगीचे में हर फूल को आत्मिक दृष्टि वृत्ति से देखो तो बहुत अच्छा लगता है। तो दृष्टि पहले या वृत्ति पहले? विचार करेंगे, वृत्ति से दृष्टि और दृष्टि से हमने किसका अवगुण देखा तो वृत्ति में चला गया। देखा दृष्टि से अन्दर वृत्ति में चला गया, तो क्या हो गया? इसलिए दृष्टि सदा सुखकारी तभी होगी जब हमारी बुद्धि की लाइन क्लीयर हो, मनोवृत्ति साफ हो।

आत्मा क्या है? उसमें मन-बुद्धि-संस्कार हैं। है तो छोटी-सी, उसमें सारा रिकॉर्ड भरा हुआ है। अभी बाबा ने मन को शान्त कर दिया, बुद्धि को शुद्ध श्रेष्ठ बना दिया और संस्कार पहले वाले सारे बदल गये। मन बुद्धि ने बदला। मैं मेरा को समझके बदल गये। मैं बोलने में भी कितना फायदा हो गया! मनमनाभव कहते हैं फिर मध्याजीभव में लक्ष्मी-नारायण सामने आता है। सिम्पल है, बुद्धि में और कुछ नहीं है, लक्ष्मी-नारायण सामने हैं। जैसे ही बाबा ने आत्मा का ज्ञान दिया मेरा बच्चा हो तो अच्छा लगा। तो पहले अपने को आत्मा समझूँ या परमात्मा का बच्चा समझूँ। आत्मा समझके परमात्मा का बच्चा हूँ, ऐसे इज़ी है या परमात्मा का बच्चा हूँ, यह इज़ी है? आत्मा समझने में टाइम लगता है क्योंकि आत्मा को देह-अभिमान में रहने की आदत है इसलिए न्यारा प्यारा नहीं है, कोई-न-कोई, कहाँ-न-कहाँ मेरेपन की लागत है और देही-अभिमानी स्थिति में बिल्कुल न्यारा प्यारा है।

ऐसी योग के लगन की अग्नि हो जो सभी की सब कमजोरियाँ खत्म हो जायें इसलिए परम आत्मा की सन्तान हूँ। मैं आत्मा हूँ पर हूँ परमात्मा की। देह, सम्बन्ध, दुनिया सब पराये हैं, मेरे नहीं है। मेरा तो एक दूसरा न कोई। जब मेरा एक है तो मैं कौन हूँ? जैसे हमारे ब्रह्मा बाबा को मैं कृष्ण बनने वाला हूँ, यह घड़ी-घड़ी स्मृति में था, उस घड़ी नारायणी नशे में दिखाई पड़ता था माना वो नारायण के सतयुगी संस्कार अनुभव होते थे। हमको भी बाबा अपने समान बनाना चाहता है। जैसे वो बना है, सिखाता है मैं जैसे बन रहा हूँ तुम भी ऐसे बनो, यही राजयोग हैं। अगर मन कर्मेन्द्रियों के वश है तो गुलाम है तो राजयोग नहीं है। योग लगाता है पर राजाई नशा नहीं है। अगर मन कर्मेन्द्रियाँ बिल्कुल ऑर्डर में हैं तो राजाई नशा चढ़ता है।

पहले हम समझते थे दान पुण्य करने से राजायें बने हैं, उनको भी नशा था पर वो भी सब खत्म हो गये हैं। पर हमें बाबा कहते इस राजयोग से तुमको राजाओं का राजा बना रहा हूँ, पवित्रता से योग से राजाओं का राजा। तो पहले अपवित्रता का नाम-निशान नहीं रहे। बनाने वाला बाबा, क्या बना रहा है वो दिखा रहा है। साक्षात्कार के साथ यह संकल्प हो कि मुझे ऐसा बनना है। तो बनने की भावना से बन जाते हैं। बनाने वाले में भी भावना है, इसी समय बन सकते हैं, ऐसा समय फिर नहीं आने वाला है, यही टाइम है जो बनाने वाला बना रहा है, क्या बनना है वो दिखा रहा है, कैसे बना रहा है वो भी बता रहा है। तो अपने आपको सम्भालो, समय चला जायेगा। बनाने वाला भी मुफ्त में कम्पनी दे रहा है, मुफ्तलाल कम्पनी में बिठा रहा है। जो कम्पनी के मालिक होते हैं उन्हें बहुत नशा होता है। ऐसे बाबा को प्यार करें या प्यार में लीन हो जायें। योग क्या है? बाबा के प्यार में समा जाना।

राधे कृष्ण मुरली की धुन से नाच रहे हैं, हंस रहे हैं पर लक्ष्मी-नारायण सभ्यता से खड़े हैं एकदम, तो इनको सामने रखने से हम उन जैसा बन सकते हैं। वो संस्कार अभी बन रहे हैं। तो लक्ष्मी-नारायण कैसे बनें? मन में कोई इच्छा नहीं, कोई ममता नहीं, मुझे कुछ चाहिए नहीं, बुद्धि फ्री है। बुद्धि योग कहा जाता है मन योग नहीं कहा जाता है क्योंकि मन से योग नहीं लगेगा, मन को शान्त रखना है। भटकना, लटकना, किसी का आधार लेना छोड़ देवें तो मन शान्त रहेगा। जिसका मन शान्त नहीं है वो राजयोगी नहीं है। राजयोगी यह सिर्फ टाइटल नहीं है, पर प्रैक्टिकली ऐसी लाइफ जीने वाला ही राजयोगी है। सच्चाई, प्रेम से अपनेपन की फीलिंग है तो कोई कहाँ से भी आता जाता है, पर बाबा के बच्चे हैं जिसे यह फीलिंग है उसकी दिल बड़ी खुश और मजबूत है।

भले कोई गुस्सा करे, भले कोई कुछ अपने को दिलखुश मिठाई समान अपनी स्थिति बनाके रखे। जो दिल खुश रखने वाला है उसके सामने कोई भी आवे उसकी भी दिल को वो खुश करेगा अर्थात् दिलखुश मिठाई बनाओ भी और खिलाओ भी, ऐसी अवस्था हो।

तो सारा दिन जो भी सेवा है वह करते अगर दिलखुश मिठाई मेरे साथ है तो जो बाबा चाहता है आपस में मिल करके रहें तो बहुत अच्छा रह सकते हैं। कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म ऐसा करें जो कर्मातीत बनें। सारा दिन लगन है कि मुझे कर्मातीत बनना है तो फिर उसके लिये कर्म भी ऐसा करना है जिससे स्थिति कर्मातीत बने, श्रेष्ठ कर्म हो। घर जाने के लिए कर्मातीत स्थिति चाहिए, सतयुग में जाने के लिए श्रेष्ठ कर्म चाहिए। बाबा को देख फॉलो फादर करते हैं तो कर्म बड़े बलवान है। बाबा कहते हैं टेढ़ा रास्ता हो तो सीधा कर दो, यह नहीं कहो रास्ता टेढ़ा है। इतने कर्म अच्छे हों। कोई खड्डे में गिरके चोट लग जावे या मोच आ जावे, ऐसे कर्म नहीं करने का है क्योंकि हम वतन की ओर चल रहे हैं ना। तो ईश्वरीय स्नेह ऐसा है जो रूह में चला गया है। पहले पत्र में लिखते थे ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न यादप्यार स्वीकार हो। तो सदा ही देखो कि ईश्वरीय स्नेह कभी खाली तो नहीं होता है क्योंकि स्नेह ही सम्पन्न बना रहा है, समय ऐसा है जो करना है अब कर ले, कल किसने देखा। जो अब किया हुआ होगा, कल कर देंगे।

बीती बात को याद करना भूल है। जिस घड़ी बीती बात कोई याद आयी या मुख से वर्णन की तो प्रेजेन्ट खलास तो इससे फ्यूचर क्या बनेगा? तो कोई कोई बात ऐसी मजबूत बनाती है बीती को बीती देखो इस दुनिया को जीती न देखो। तो कई टोटके ऐसे बाबा ने सुनाये हुए हैं, जो सदा खुश रहो आबाद रहो, न विसरो न याद करो। क्या न विसरो, क्या न याद करो यह भी बुद्धि चाहिए। जो बात बाबा की है वो भूलना नहीं है, जो भूलने वाली बात है वो याद नहीं करनी है। तो कितना अपने आपको समझाने के लिए, सिखाने के लिए, लायक बनने के लिए बाबा ने होमवर्क दिया है। ऐसा अच्छा बाबा है।

मधुबन के कुछ भाईयों की गुल्जार दादी जी से रूहरिहान

गुल्जार दादी:- दिन-प्रतिदिन बाबा हमें अव्यक्त बना रहा है, भले व्यक्त में हैं लेकिन व्यक्त में होते हुए भी व्यक्त की स्मृति से परे मैं आत्मा हूँ। शरीर तो आधार है लेकिन मैं कौन हूँ? मैं तो आत्मा ही हूँ। तो इसी स्मृति में बैठने से, चलने से मज़ा बहुत आता है। जैसे साक्षी होके अपने आपको देख भी रहे हैं लेकिन हमारे सामने सदा नयनों में बाबा ही है। हम तो यहाँ देखते हैं ना, यह चित्र तो मुझे ऐसा ही लगता है जैसे साकार में बाबा बैठा है। बाबा के नयनों में देखो कितना अच्छा मुस्करा रहा है। ऐसे लगता है जैसे साकार में बाबा बैठा है, यह चित्र नहीं है। अगर ज्यादा टाइम आप उस रीति से देखो ना, तो आपको चित्र नहीं लगेगा। एकदम ऐसे लगता है, जैसे बाबा सामने आ गया है, चैतन्य में है। चित्र बनाने वालों ने बाबा के चित्र में ऐसा कुछ न कुछ भर दिया है। हम लोगों के साथ तो साकार में बाबा चौबिसों घण्टे रहते थे, वो लाइफ देखो कितनी प्यारी थी। खाने पर बैठते थे तो भी बाबा बच्चों के साथ उसी रूप में होते थे। बाबा पहले चक्कर लगायेगा, देखेगा खाना सबको ठीक मिला या नहीं फिर शुरू करायेगा तभी निश्चित होगा। छोटे थे ना, तो बाबा जगह-जगह पर ऐसे प्यार से हाथ पकड़कर पूछेगा बच्ची कैसे हो! बच्ची, कैसे हो! तो यह चित्र देख करके मुझे ऐसे लगता है जैसे चैतन्य में बाबा मेरे आगे खड़ा है क्योंकि हम लोगों ने देखा है ना।

प्रश्न:- दादी, साकार, अव्यक्त और निराकार आप तीनों एक में ही देखती हैं कि अलग अलग अनुभव करती हैं? आप जब ऊपर बाबा के पास जाती हैं तो एक बार आपने सन्देश में सुनाया था कि शिवबाबा से भी मिले फिर ब्रह्माबाबा से भी मिले, तो दोनों से अलग-अलग कैसे मिलेंगे?

उत्तर:- अलग-अलग अनुभव होता है, साकार में भी बिन्दी तो दिखाई देती थी। साकार में अटेन्शन वहाँ ही जाता था। बाबा की भ्रकुटी में यहाँ प्रैक्टिकल में चमक थी। कोई कोई फोटो में भी वो चमक आ जाती थी। जैसे ऊपर में निराकार है ना, वो हमको मस्तक के बीच में नज़र आता है। तो वतन में जब जाते हैं तो पहले जैसे हम साकार में बाबा से मिलते हैं, फिर थोड़े टाइम के बाद साकार रूप अव्यक्त रूप में बदली होता है। जैसे साकार में बाबा से बातें की, बाबा ने दिल लिया, बात कर ली, फिर कुछ टाइम के बाद वह साकार रूप बदली होता है यानि अव्यक्त और साकार दोंनो से मिलन हुआ, अन्तर सिर्फ लाइट का होता है। यह सीन अगर हम साकार में भी इमर्ज करेंगे तो यहाँ साकार में भी वो अनुभव होगा।

प्रश्न:- आप साकार बाबा के साथ रहके, वह सबकुछ याद करके, वही स्वरूप इमर्ज कर लेती हो लेकिन हम लोगों ने तो साकार बाबा को देखा नहीं, आपसे सुनते हैं और अव्यक्त बापदादा से मिलते हैं, उस हिसाब से हमारे लिए तो मेहनत है, हम कितना उसको इमर्ज करके उस स्वरूप का अनुभव कर

सकते हैं?

प्रश्न:- दादी हम अगर अव्यक्त बापदादा को याद करते हैं तो आपका फेस सामने आता है या दादियों के द्वारा जो पालना मिली है, अव्यक्त बापदादा से जो पालना मिली है, वह सीन याद आती है, तो क्या यह सही है?

गुल्जार दादी:- हाँ, बाबा का वो शरीर तो नही है ना। परन्तु आप जिस समय भी याद करो तो बाबा को उसी अव्यक्त रूप में ही देखेंगे। आपने व्यक्त शरीर तो देखा ही नहीं, तो आपके आगे अव्यक्त ही आयेगा यानि इमर्ज करते हैं तो वही आयेगा। आप इमेजिन कर सकते हैं। आपको अव्यक्त सीन ही सामने आयेगा। अव्यक्त कहानियाँ याद आयेंगी। हमारे आगे साकार बाबा की कहानी है।

दादी ने बेगरी पार्ट की एक कहानी सुनाई

जब हम कराची से आबू में आये तो जो भी पैसा था, उससे इतनी टिकटें खरीदी, इतना सामान लेकर आये, तो उसमें सब पैसा खत्म हो गया। यहाँ आने से बेगरी पार्ट शुरू हो गया। लेकिन बाबा की शक्ल वैसे ही बेफिक्र बादशाह जैसी। बाबा कहेगा कोई बात नहीं बच्ची, आ जायेगा। हमें लगता था कैसे आयेगा! ऐसे हम लोगों का संकल्प चलता था लेकिन बाबा एकदम बेफिक्र। बाबा को भी सोच तो चलता था, अन्दर ही अन्दर पर शक्ल पर कभी नहीं आने दिया। बेगरी लाइफ में सुनाया ना कि आज यह है, आज वह है, आज रोटी के लिए नहीं है, आज उसके लिए नहीं है। ऐसी कोई बात किसी से कहेगा नहीं। दिल के अन्दर ही रखेगा और बाबा को यह निश्चय था तो आ जायेगा, बाबा बच्चों को भूखा नहीं मारेगा। बाबा को यह निश्चय था और हुआ भी ऐसे ही। पोस्ट वाला भी पहचान गया था, इन्हों के पास पोस्ट के लिफाफे में पैसे आते हैं। तो बाबा कहता था ऐसे नहीं भेजो, अभी भोली भोली मातायें कैसे भी भेज देती थी, उन्हों को क्या पता। लिफाफे से वो दिखाई देता था लेकिन पोस्ट वाले ऐसे थे जो कभी खोलते नहीं थे। समझ गये थे। हमको याद है, एक दिन बाबा ने कहा अभी 12 बजे हैं, 1 बजे तक देखो, यानि ऐसे भी टाइम आया लेकिन कोई न कोई निमित्त बनता था, कुछ न कुछ पोस्ट में आ जाता था। लिफाफे में कोई 20-25 या 50 वा 100 रूपये भी डालकर भेज देते थे। ऐसा कभी नहीं हुआ जो बाबा कहे आज तो कुछ भी नहीं है। तो बाबा के वह चरित्र याद करते, बाबा के प्यार में खो जाते हैं।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

इच्छा मात्रम् अविद्या स्थिति

मीठे बाबा ने हमें विशेष शिक्षायें देते इशारा किया – इच्छा मात्रम् अविद्या। ये स्लोगन अगर हरेक स्वयं में याद रखे, ध्यान रखे तो कई समस्याओं से सहज पार हो सकता है। इच्छा एक नहीं है अनेक प्रकार की होती है। इच्छा सिर्फ ये नहीं होती कि मैं धनवान बनूँ, मैं कोई सेठ-साहूकार, आफिसर बनूँ। ये तो कॉमन इच्छा है। ये इच्छा मनुष्य को कई प्रकार से ऊंचे से नीचे, नीचे से ऊपर का अनुभव कराती। परन्तु अपने ज्ञान के हिसाब से ज्ञान की गहराई में जाओ तो इच्छा कभी मनुष्य को अच्छा नहीं बनायेगी। इच्छा चीज़ ही ऐसी है जो अच्छा भी हो तो भी बुरा बना देती है। अगर हम लिस्ट बनावे तो मनुष्य के पास 101 इच्छायें हैं। जैसे पर्सनल इच्छा होती कि हम सुन्दर बनें, ये है देह अभिमान, मनुष्य इच्छा रखता है कि मुझे सभी रिस्पेक्ट दें, वो जितनी रिस्पेक्ट चाहता है उतनी रिस्पेक्ट गँवाता है। इच्छा करता है कि मैं अच्छा बनूँ, यह इच्छा वाला भी अच्छा नहीं बनता। अच्छा का ज्ञान है तो अच्छा नेचरल बनना चाहिये, न कि इच्छा से। हमको ज्ञान है कि हमको श्रेष्ठ बनना है। हम अनादि अविनाशी श्रेष्ठ आत्मायें, श्रेष्ठ देवतायें थे। जो हम थे, हमें वैसे ही होना है। तो ये होने के लिये पुरुषार्थ करना है, न कि इच्छा करना है। मनुष्य इच्छा करता है मुझे सभी प्यार की दृष्टि से देखे। तो इच्छा से सभी प्यार की दृष्टि से नहीं देखेंगे। मैं सभी को प्यार की दृष्टि से देखूँगी तो ऑटोमेटिक सभी से प्यार मिलेगा। इच्छा से प्यार नहीं मिलेगा परन्तु स्वयं प्यार देने से प्यार मिलेगा। इसीलिये रिस्पेक्ट देने से रिस्पेक्ट मिलेगा, न कि मांगने से रिस्पेक्ट मिलेगा। इच्छा वस्तु व वैभव की होती, तो ये वस्तु और वैभव सब अल्प काल के सुख के हैं। जो अल्पकाल के सुख की इच्छा करेगा तो जरूर अल्पकाल की चीज़ आज होगी, कल नहीं होगी फिर उसकी फीलिंग आयेगी। तो इच्छा ने फीलिंग में लाया माना फेल किया। इच्छा मनुष्य को फैल्युअर कर देती है। इसीलिये इच्छा मात्रम् अविद्या बनो। अविद्या माना अज्ञान। कई ये भी इच्छा करते हैं कि मैं इनसे भी ज्ञान में आगे जाऊं। आप कहेंगे यह तो अच्छी इच्छा है। लेकिन किसी कारण से नहीं जा सकते तो चलते-चलते उसको ना-उम्मीदी आ जाती है। ना-उम्मीदी भी मनुष्य को फैल्युअर कर देती है, कमज़ोर बना देती है। लेकिन बाबा ने हमें जो ज्ञान दिया है उस ज्ञान से हमें ये ध्यान रहता कि

हमें बाप से तो वर्सा मिलेगा परन्तु टीचर से तो पढ़ाई पढ़नी है। तो मैं इच्छा से पढ़ाई नहीं पढ़ती लेकिन मुझे टीचर मिला ही है पढ़ाई के लिये और स्टूडेन्ट माना ऊंचे ते ऊंची पढ़ाई पढ़ते आगे बढ़ते जायें। मुझे परम शिक्षक मिला है तो पढ़ना मेरे जीवन का धर्म है। मैं अपना धर्म पालन करती, धर्म अर्थात् धारणा करती। धारणा है कि मुझे पढ़ना है और पढ़ाई में मुझे फुल ध्यान देना है। धारणा अलग चीज है लेकिन इच्छा रखूँ कि मैं ये पढ़ूँ, ये पढ़ूँ, ये करुँ, ये करुँ.... और कभी कर सके या न कर सके तो स्थिति अप-डाउन होती रहेगी। इसलिये कहा हमें किसी भी प्रकार की इच्छा नहीं करनी है। आज इच्छा करुँ कि माला का पहला नम्बर दाना बनूँ लेकिन कल न आऊं तो दिल उदास हो जायेगी। पर मेरा कर्तव्य है फर्स्ट नम्बर जाने के लिये मेहनत करना, ये मेरा धर्म है, धर्म पर चलना, धारणा करना वो एक ज्ञान है। पर इच्छा से मेहनत करना ये मनुष्य को भारी कर देता क्योंकि उसमें हार-जीत, जीत-हार दोनों आती। इसलिये हमें कोई भी बात में इच्छा रखकर आगे नहीं जाना है। परन्तु लक्ष्य रखना है ऊंच बनने का तो लक्षण ऑटोमेटिक आयेंगे। इसीलिये ये ज्ञान, ये योग सहज है माना सहज रूप में पुरुषार्थ करो। सहज है श्रीमत पर चलो। लक्ष्य है मुझे हर कदम श्रीमत पर चलना है। आप ऑटोमेटिकली श्रेष्ठ हो जायेंगे। मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। क्योंकि ये ज्ञान, योग हमको सहज परिवर्तन होने की शक्ति देता है। जैसे दुनिया वाले कहते पति-पत्नि इकट्ठे पवित्र रहना असम्भव है। लेकिन बाबा हमें 21 जन्मों की बादशाही देता, इतनी बड़ी लॉटरी देता और उसके लिये अगर हम ये अन्तिम जन्म अपने को पावन बनाते तो कितनी बड़ी हमको लॉटरी मिल जाती है। दूसरा, जब हमको लक्ष्य ही मिला हम आत्मा भाई-भाई हैं तो पावन होने में हमको डिफीकल्टी क्या है? सहज है। तो क्यों नहीं हम सहज ही अपनी ऐसी प्रवृत्ति बनावे इसलिये अभी स्वयं ही स्वयं से पूछो कि मेरे जीवन में कोई भी हद की इच्छा है? कोई को खाने-पीने की इच्छा होती, कोई को घूमने-फिरने की इच्छा होती, कोई को कोई भी वैभवों की इच्छा होती, घर अच्छा चाहिये, रहन-सहन अच्छा चाहिये, ये चीज अच्छी चाहिये.... चाह माना इच्छा, इससे नुकसान होता। बाकी हाँ, क्यों नहीं हमें अच्छा रहना चाहिये, अच्छा खाना चाहिये, सब अच्छा करना चाहिये। लेकिन एक है नेचरल रूप से करना, सहज रूप से करना, एक है इच्छा से करना। इन दोनों के बीच बड़ा अन्तर है। जैसे बाबा ने कहा कि बच्चे तुम्हें अपने कैरेक्टर्स सुधारना है। तो कैरेक्टर्स से मतलब ही है कि हमारी चाल-चलन, बोल-चाल, व्यवहार सब प्रकार से दैवी होना चाहिये जैसेकि फरिश्ता हो। अगर हम ये लक्ष्य रखकर चलते कि हमें तो अब अव्यक्त रहना है, हमें तो फरिश्ता होना है, हम तो दिव्य है, हमें ये मालूम है कि हमें घर जाना है तो ऑटोमेटिकली हमारी चाल-चलन दिव्य रुहानियत की हो जाती है। यही हमारा कैरेक्टर प्रत्यक्ष प्रमाण हो जाता है दूसरे के लिये। अब इस कैरेक्टर को सुधारने में हमें इच्छा क्या करनी है। ये तो जीवन की धारणा है। इस धारणा को जीवन में लक्ष्य रखकर चलना है, इसके लिये क्या इच्छा करो। दूसरी बात, जीवन में क्या चाहिये जो इच्छा रखो। बाबा ने कहा है सिम्पल दाल रोटी खाओ। अगर 36 प्रकार के भोजन खाओ तो क्या हेल्थ ठीक रहेगी? कई हैं जो डॉक्टर के कहने पर शुगर छोड़ सकते हैं लेकिन अपनी इच्छा से नहीं छोड़ सकते। हम बन रहे हैं बेगर टू प्रिन्स। तो बेगर टू प्रिन्स को क्या इच्छा रखनी है। एक ही शुभ भावना है कि हमको बेगर टू प्रिन्स बनना है। तो बेफिक्र बादशाह बनना है। फिक्र वाला बादशाह नहीं बनना है। इच्छा फिक्र वाला बादशाह बनायेगी। बाबा ने बादशाहों का बादशाह बनाया तो फिर क्या इच्छा होगी। मनुष्य को और कोई नहीं लेकिन एक इच्छा होती है कि मैं जितना हो सके वहाँ तक जिन्दा रहूँ। मैं ये करुँ, ये करुँ....। लेकिन बाबा कहते पहले अपनी देह से मोह नष्ट करो। हमें घर जाना है तो घर जाने की खुशी है या पुरानी दुनिया में रहने की? फिर जीवन की इच्छा क्या हो? बाबा कहते हैं इन आंखों से जो कुछ देखते हो देखते हुए भी नहीं देखो। जब देखते हुए भी नहीं देखना है तो बाकी क्या इच्छा रखें। क्या टी.वी. देखने की इच्छा रखें! आत्मा भाई भाई देखना है। देह के सम्बन्धियों को भी देखते हुए भी नहीं देखना है। यदि देखेंगे तो पहले देह दिखाई पड़ेंगे, फिर सम्बन्ध दिखाई पड़ेंगे, फिर वो कैसी स्थिति वाले हैं वो दिखाई पड़ेंगे, फिर वो अच्छे हैं या बुरे हैं वो दिखाई पड़ेंगे। मुझे अपनी याद की यात्रा में रहना है या अच्छे-बुरे के चिन्तन में रहना है? तो देखते हुए भी नहीं देखना है। इसलिये बाबा ने हमें ऐसा सहजयोगी भव का वरदान दिया है जो देखते हुए भी नहीं देखो। सहज पुरुषार्थ भी करो लेकिन देखते हुए भी नहीं देखो। तो ऑटोमेटिकली हमारे कैरेक्टर ऊंचे हो जायेंगे इसलिये फाउन्डेशन ही बाबा ने ऐसा दे दिया है जो हम एक बाबा को देखते हुए भी दूसरे को न देखें। एक बाबा को देखना माना ही पावन बनना, किसी देह को देखना माना ही पतित संकल्प करना। देह को देखना ही नहीं है तो बुरे संस्कार आयेंगे ही क्यों। एक बाबा को देखें तो संस्कार भी अच्छे आयेंगे। इसलिये बाबा जो रोज कहते हैं कि ज्ञान की पढ़ाई रोज करो क्योंकि इस पढ़ाई से ही शक्ति भरती। नहीं तो देहधारियों में बुद्धि जाती। देहधारियों में बुद्धि जाने से स्थिति खराब होती। इसलिये बाबा ने हमको जितना ही मीठा बनाया, उतना ही प्यारा बनाया, उतना ही हमें रुहानियत दी है, उतना ही हमें न्यारा बनाया है तो इसमें कितना मज़ा है। किसी से ममत्व होगा, इच्छा होगी तो जरूर खुशी गायब होगी। अच्छा।